# प्रेस विज्ञप्ति

राजलदेसर, 31 जनवरी। ग्यारहवें अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी की कुशल प्रशासक के साथ कुशल प्रशिक्षक के रूप में भी विशिष्ट पहचान है। प्राच्य विद्याओं के अध्ययन एवं शोध पर विशेष ध्यान देते है। गुरुदेव की सजगता एवं जाग्रत अवस्था का रूप अध्यात्म समवसरण में उस समय देखने को मिला, जब 50 से अधिक साधु–साध्वियों द्वारा 'महाप्रज्ञ को नमन हमारा' (महाप्रज्ञम् नमाम्यहम्) पर संस्कृत श्लोकों की प्रस्तुति पर एक–एक अक्षर, विभक्ति, अलंकार, मात्रा आदि पर उन्होंने विशेष सजगता के साथ ध्यान दिया एवं उनके शुद्धिकरण के निर्देश दिए। समीक्षात्मक दृष्टि का जो रवैया गुरुदेव ने अपनाया वह संघ और विकास की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण है।

अध्यात्म समवसरण में प्रतिदिन के प्रवचन में उन्होंने 'साधु कौन होता है ?' विषय पर चर्चा करते हुए कहा जो सर्दी–गर्मी में सम रहता है, अनुकूल–प्रतिकूल सहता है, वह निर्ग्रन्थ होता है। उसमें मन में राग–द्वेष के भाव नहीं होते। मोह–माया से दूर रह कर साधना–रत रहता है।

उन्होंने कहा – व्यक्ति का मनोबल कमजोर नहीं होना चाहिए। कैसी भी परिस्थिति आ जाएं, हमारा मन आन्दोलित या विषादग्रस्त नहीं होना चाहिए। अनुकूल–प्रतिकूल परिस्थितियों को सहने का प्रयास करना चाहिए।

भगवान महावीर का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा – भगवान को एक तरफ चंडकौशिक सर्प से भयंकर वेदना मिल रही थी तो दूसरी तरफ देवराज इन्द्र उनकी सेवा में उपस्थित था। मगर भगवान महावीर ने सम–विषम परिस्थितियों में सहिष्णु नीति को अपनाया और दोनों के प्रति शान्त भाव मुद्रा बनाये रखी। इसी प्रकार भगवान राम भी सहिष्णु व्यक्तित्व वाले थे। उन्होंने वनवास और राज्याभिषेक में अपने आपको समान भाव वाला बनाए रखा। भगवान महावीर, भगवान राम आदि ने सम–विषम परिस्थितियों में सहिष्णु नीति को अपना कर महापुरुष कहलाने का गौरव प्राप्त किया। सहिष्णुता, महापुरुष का एक लक्षण होता है।

उन्होंने कहा – विवेक चेतना जाग जाए तो आदमी विकास की दिशा में आगे बढ सकता है। विवेक की दृष्टि से पतन हो जाए तो सब कुछ नष्ट हो जाता है।

संघ में साधु–साध्वियों में भाषा सम्बन्धी विकास ज्यादा से ज्यादा हो इसके लिए आज से एक नया प्रयास किया गया। इस अवसर पर आचार्यश्री महाश्रमणजी ने कहा संस्कृत भाषा लुप्त न हो जाए, यह हमारा प्रयास है। आचार्य तुलसी ने इस विषय में न जाने कितना–कितना काम किया। आचार्य महाप्रज्ञ संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे। मानों वे तो संस्कृत भाषा के समुद्र हों।'' संघ के सभी साधु–साध्वियों ने संस्कृत श्लोकों की रचना की, वह सराहनीय है। यह क्रम उत्तरोत्तर आगे बढते रहना चाहिए। प्रयास करने की अपेक्षा है। हिन्दी में भी हमने प्रयास किया है।

इस अवसर पर दिल्ली प्रवास करके पधारी साध्वी यशोधराजी एवं उनकी सहवर्तिनी साध्वियों ने गुरुदर्शन किए। साध्वी यशोधराजी ने गुरु–दर्शनों एवं गुरु सन्निधि से मिले अपूर्व आनन्द को व्यक्त करते हुए दिल्ली प्रवास के कुछ संस्मरण सुनाएं। इस अवसर गुरुदेव ने कहा – साध्वीश्रीजी का मनोबल मजबूत था इसलिए वे आ गई। सहवर्तिनी साध्वियों ने सामूहिक गीतिका प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीतकुमार ने किया।

# प्रेस विज्ञप्ति

राजलदेसर 31 जनवरी। दिल्ली प्रवास करके पधारी साध्वी यशोधराजी एवं उनकी सहवर्तिनी साध्वियों ने आज गुरुदर्शन किए। इस अवसर पर साध्वीश्री ने कहा – हमें खुशी हैं, हम अपने घर में आएं हैं। अपने आपको तेजस्वी बनाने के लिए आपके श्रीचरणों में उपस्थिति हुए हैं। आज अपने आपको गुरुचरणों में पाकर ऊर्जावान्, शक्ति–सम्पन्न एवं पूर्ण स्वस्थता का अनुभव कर रही हूँ।

उन्होंने कहा – गुरुदेव की महिमा का क्या बखान करूं, इन्हें शब्दों में बांधना कठिन है। दिल्ली में असाध्य बीमारी की अवस्था में गुरुदेव का संदेश स्वास्थ्य लाभ का काम कर रहा था, दुआ का काम कर रहा था। सारे तीर्थ आचार्य प्रवर में समाये हुए हैं हमारे पाप, ताप–संताप स्वतः समाप्त हो गए। हम पूर्ण निर्मल हो गए। मुनिश्री ताराचन्दजी स्वामी एवं मुनिश्री सुमतिकुमारजी आदि ने मुझे दर्शन दिए और मेरे स्वास्थ्य लाभ हेतु उन्होंने जो भावना व्यक्त की वह मैं कभी नहीं भूल सकती।

इस अवसर पर आचार्यप्रवर ने कहा – आज संस्कृत काव्य चल रहा है। साध्वी यशोधराजी भी संस्कृत अच्छी जानती है। जब हम बालमुनि थे तो हमारी संस्कृत की मौखिक परीक्षिका साध्वी यशोधराजी थी। साध्वीश्रीजी धर्मसंघ की अच्छी सेवा कर रही हैं। साध्वीश्रीजी का मनोबल मजबूत था इसलिए वे हमारे पास आ ही गई।

सहवर्तिनी साध्वियों ने 'तुम हो गुरुवर इस गण की धड़कन' गीतिका का संगान किया। साध्वीश्रीजी के साथ मार्गसेवा में उपस्थित दिल्ली के श्रावकों ने भी गुरु–दर्शन किए एवं अपने विचार प्रकट किए।।